DSSSB TGT & PGT
अभिज्ञानशांकुन्तलम् परिचय (साहित्य)
ROJGAR ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
अभिज्ञानशांकुन्तलम् परिचय (साहित्य)
LIVE
26-07-2024 05:00 PM

अभिज्ञानशाकुन्तलम् परिचय (साहित्य)

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में दृश्य काव्य का विशेष महत्त्व है। दृश्य काव्य को रूपक, रूप और नाटक भी कहते हैं। संस्कृत नाट्य साहित्य में महाकवि कालिदास का अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक विशेष स्थान रखता है। कालिदास उज्जयिनी के निवासी थे और उन्होंने काली की कृपा से कवित्व शक्ति प्राप्त की थी। विद्वानों ने उनका काल प्रथम शताब्दी ई.पू. स्वीकार किया है।

उन्होंने महाकाव्य, खण्डकाव्य और नाटक का प्रणयन किया। उनके नाटकों में अभिज्ञानशाकुन्तलम् आज भी पाठकों को अपनी ओर अकर्षित करने में पूर्णतः सक्षम है। जर्मन कवि गेटे ने इस नाटक की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। सात अंकों के इस नाटक में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रणय, विवाह, विरह और पुनर्मिलन का महाकवि ने वर्णन किया है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का परिचय

इकाई के इस अंश में आप अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की कथावस्तु, उसके घटनाक्रम का समय तथा महाकवि कालिदास की नाट्यकला एवं शैली का अध्ययन करेंगे।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की कथावस्तु

महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक संस्कृत साहित्य का ही नहीं अपितु विश्व साहित्य का सर्वोत्कृष्ट नाटक है। जर्मन विद्वान् गेटे ने इस नाटक की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का कथानक महाभारत के आदिपर्व में वर्णित 'शकुन्तलोपाख्यान तथा पद्म पुराण के 'स्वर्गखण्ड' की कथा पर आधारित है। महाकवि कालिदास के श्रृंगार रस प्रधान इस नाटक में सात अंक है। राजा दुष्यन्त इस नाटक के नायक, शकुन्तला नायिका तथा माढव्य विदूषक है।

सात अंकों वाले इस नाटक में महाकवि ने दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रणय, विरह तथा पुनर्मिलन का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है। प्रिय विद्यार्थियों! इकाई के इस अंश में आप अंकानुसार अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की कथावस्तु का अध्ययन करेंगे।

प्रथम अंक - प्रथम अंक का प्रारम्भ नान्दी पाठ से होता है। नान्दी पाठ में महाकवि ने शिव की स्तुति की है। नान्दी पाठ के पश्चात् महाकवि कालिदास ने ग्रीष्म ऋतु का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। आश्रम के मृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त सारथि के साथ प्रवेश करते हैं। वह मृग को मारना ही चाहते हैं कि उसी समय तपस्वी का प्रवेश होता है और वह राजा दुष्यन्त से निवेदन करता है कि यह आश्रम का मृग है, इसे न मारिये। तपस्वी के निवेदन के पश्चात् राजा धनुष से प्रत्यंचा उतार लेते हैं,

तपस्वी भी उनको चक्रवर्ती पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देकर उनसे प्रार्थना करता है कि आश्रम में जाकर अतिथि सत्कार स्वीकार करें। वह राजा को बताता है कि इस आश्रम के कुलपति कण्व सोमतीर्थ गए हैं। अतः अतिथि सत्कार का कार्य शकुन्तला कर रही है। राजा सारथि को बाहर छोड़कर सामान्य वेष में आश्रम में प्रवेश करते हैं। वहाँ वह वृक्षों में जल डालती हुई तीन अत्यन्त सुन्दर कन्याओं को देखता है। उन कन्याओं में एक शकुन्तला है। राजा उस पर आसक्त हो जाता है उसी समय शकुन्तला को एक भौंरा परेशान करने लगता है और वह उस भौंरे से रक्षा के लिए प्रार्थना करती है।

उस समय राजा दुष्यन्त वृक्ष की ओट से बाहर आकर शकुन्तला की रक्षा करते हैं। वह शकुन्तला और उसकी सखियों से वार्तालाप करते हैं तभी उन्हें यह ज्ञात होता है कि शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र और मेनका की पुत्री है तथा कण्व ऋषि की पालिता पुत्री है। शकुन्तला को क्षत्रिय कन्या जानकर दुष्यन्त उस पर आसक्त हो जाता है तथा उससे विवाह का विचार दृढ करता है। इसी बीच आश्रम में एक विक्षुब्ध हाथी प्रवेश करता है। राजा अपने सैनिकों को रोकने के लिए चला जाता है। शकुन्तला भी अपनी सखियों अनसूया और प्रियंवदा के साथ प्रस्थान करती है। इसी घटना के साथ अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का प्रथम अंक समाप्त हो जाता है।

द्वितीय अंक - नाटक के द्वितीय अंक में महाकवि कालिदास ने शकुन्तला पर आसक्त राजा दुष्यन्त की कामी अवस्था का वर्णन किया है। विदूषक राजा के समक्ष शिकार के विपक्ष में अपने विचार प्रकट करता है, तत्पश्चात् राजा शिकार खेलने का विचार छोड़ देते हैं और सेनापति को भी मना कर देते हैं। वह सैनिकों को आदेश देते हैं कि आश्रमवासियों को कोई दुःख न दें। राजा दुष्यन्त विदूषक को बताते हैं कि वह शकुन्तला पर आसक्त हैं और ऐसा कोई मार्ग बताओ जिससे आश्रम में कुछ सनय रुका जा सके।

उसी समय दो ऋषिकुमार प्रवेश करते हैं और राजा दुष्यन्त से प्रार्थना करते हैं कि राक्षसों से यज्ञ की रक्षा करने के लिए वे कुछ समय आश्रम में रुक जायें। राजा ऋषिकुमारों का निवेदन स्वीकार करते हैं। उसी समय राजधानी से दूत का आगमन होता है और वह माता जी का सन्देश राजा को देता है। राजा अपनी जगह विदूषक को सेना सहित राजधानी भेज देते हैं। साथ ही विदूषक रानियों से "शकुन्तला के प्रति राजा की आसक्ति है" इस घटना को न बता दे, अत: राजा विदूषक से कहता है कि शकुन्तला से प्रेम की सब बातें केवल मनोविनोदार्थ हैं वास्तविक नहीं। इसी घटना के साथ द्वितीय अंक समाप्त होता है।

तृतीय अंक - नाटक के तृतीय अंक में महाकवि कालिदास ने दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। शकुन्तला भी दुष्यन्त के प्रति आसक्त होने के कारण अस्वस्थ है। वह फूलों की शय्या पर लेटी है। उसी समय राजा भी आश्रम में प्रवेश करते हैं। वह पेड़ों की आड़ में छिपकर शकुन्तला और उसकी सखियों का वार्तालाप सुनते हैं। शकुन्तला अपनी सखियों को बताती है कि वह राजा दुष्यन्त पर आसक्त है और उनसे विवाह के बिना जीवित न रह सकेगी।

उसी समय राजा सामने आकर शकुन्तला के प्रति अपना प्रणय निवेदित करते हैं। राजा और शकुन्तला को एकान्त में छोड़कर दोनों सखियाँ बाहर निकल जाती हैं। राजा शकुन्तला के समक्ष गान्धर्व विधि से विवाह करने का प्रस्ताव रखता है। उसी समय शान्ति जल लेकर गौतमी कुटिया में प्रवेश करती है। राजा वृक्ष की आड़ में छिप जाता है। गौतमी शकुन्तला को लेकर चली जाती है तथा राजा भी यज्ञ में राक्षसों के विघ्न को दूर करने के लिए प्रस्थान करता है। इसी घटना के साथ तृतीय अंक की समाप्ति होती है।

चतुर्थ अंक यह अंक इस नाटक का प्राण है। इस अंक में महाकवि कालिदास ने मानव एवं प्रकृति के मध्य पारस्परिक प्रेम और करुणा का सुन्दर निदर्शन किया है। शकुन्तला के साथ दुष्यन्त का गन्धर्व विवाह हो जाता है। वह शीघ्र ही शकुन्तला को ले जाने के लिए किसी योग्य व्यक्ति को भेजने का आश्वासन देकर तथा शकुन्तला को स्वनाम अंकित अँगूठी प्रदान करके अपनी राजधानी हस्तिनापुर चले जाते हैं। शकुन्तला राजा के ध्यान में मग्न होकर कुटी में बैठी है। उसी समय अतिथि के रूप में दुर्वासा ऋषि आश्रम में प्रवेश करते हैं।

पति के ध्यान में मग्न शकुन्तला ऋषि का आतिथ्य नहीं कर पाती है परिणामस्वरूप ऋषि कुद्ध होकर शकुन्तला को शाप देते हैं कि 'जिसका स्मरण करती हुई तू मुझ आये हुए तपस्वी की ओर ध्यान नहीं दे रही है वह याद दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा।" दुर्वासा के वचनों को सुनकर प्रियंवदा ऋषि को प्रसन्न करने का प्रयास करती है तब दुर्वासा ऋषि बताते हैं कि अभिज्ञान का आभूषण दिखाने पर शाप का प्रभाव समाप्त हो जायेगा। इतना कहकर ऋषि दुर्वासा अन्तर्धान हो जाते हैं। प्रियंवदा और अनसूया यह निश्चय करती हैं कि शाप के इस वृत्तान्त को हम न तो शकुन्तला से कहेंगे और न ही किसी अन्य से।

जाते समय राजा ने उसको स्वनाम अंकित अगूंठी पहनाई थी। वह अँगूठी शकुन्तला के पास है। अतः राजा शकुन्तला को पहचान लेगा और शाप का कोई प्रभाव नहीं होगा। यहाँ पर विष्कम्भक समाप्त होता है।

ऋषि कण्व जब तीर्थयात्रा से लौटते हैं तब उन्हें अशरीरधारी तपोमयी वाणी द्वारा यह ज्ञात होता है कि शकुन्तला का दुष्यन्त से गार्धव विवाह हुआ है और वह गर्भिणी है। यह जानकर ऋषि कण्व इस विवाह का समर्थन करते हैं। दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण राजा दुष्यन्त शकुन्तला को भूल जाता है और उसको हस्तिनापुर ले जाने के लिए किसी व्यक्ति को नहीं भेजता।

शकुन्तला पूर्ण गर्भिणी है, अतः ऋषि उसे राजा के पास भेजने का सम्पूर्ण प्रबन्ध करते हैं। शकुन्तला की विदायी की तैयारी की जाती है। वन के वृक्षों ने शकुन्तला के लिए रेशमी वस्त्र, लाक्षारस तया आभूषण प्रदान किये हैं। सभी तपस्विनियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं। शकुन्तला अपनी सखियों, वन के वृक्षों और मृगों आदि से विदायी लेती है। शकुन्तला के वियोग में सभी दुःखी हैं।

विदायी के अवसर पर ऋषि कण्व शकुन्तला को उसके करणीय कर्तव्यों की शिक्षा देते हैं और राजा दुष्यन्त के लिए सन्देश भी देते हैं। ऋषि कण्य शकुन्तला को विदा करते हैं। शकुन्तला अपनी सखियों तथा वनज्योत्स्ना से भी विदा लेती है। शकुन्तला के साथ गौतमी और दो तपस्वी हस्तिनापुर जाते हैं। शकुन्तला को पति घर भेजकर ऋषि कण्व सन्तोष का अनुभव करते हैं। इसी के साथ चर्तुथ अंक की समाप्ति होती है।

पंचम अंक इस अंक में शकुन्तला को लेकर शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतमी राजद्वार में पहुंचते हैं। राजा दुष्यन्त के आदेशानुसार वे महल में प्रवेश करते हैं। दुर्वासा के शाप के कारण राजा शकुन्तला से विवाह का समस्त वृत्तान्त भूल चुका है। पारस्परिक अभिनन्दन के पश्चात् शाङ्गव राजा दुष्यन्त से निवेदन करता है कि आप दोनों के गान्धर्व विवाह को ऋषि कण्व ने स्वीकार किया है और शकुन्तला को आपके पास भेजा है।

आप शकुन्तला को स्वीकार करें दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण राजा गान्धर्व विवाह के वृत्तान्त को सुनकर आश्चर्यचकित हो जाता है और शकुन्तला से विवाह की घटना को असत्य बताता है। इस पर गौतमी शकुन्तला का घूँघट हटा देती है किन्तु राजा उसको नहीं पहचानता है। 'शकुन्तला राजा द्वारा दी गई अंगूठी दिखाकर उसको विश्वास दिलाने का प्रयत्न करती है किन्तु वह अंगूठी रास्ते में शचीतीर्थ नदी की वन्दना करते समय उसके हाथ से गिर जाती है, अत: उसका यह प्रयास भी निरर्थक सिद्ध होता है।

शाङ्गरव और राजा के मध्य आवेशपूर्ण वार्तालाप होता है किन्तु राजा शकुन्तला को स्वीकार करने से मना कर देता है। पुरोहित शकुन्तला को पुत्र जन्म तक अपने घर में रखने का प्रस्ताव देते हैं। शाङ्गरव, शारद्वत और गौतमी शकुन्तला को वहाँ छोड़कर चले जाते हैं। शकुन्तला स्वयं को कोसती है और रोती है। उसी समय एक अप्सरा (मेनका) आकर उसे उड़ा ले जाती है। यह सुनकर सभी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। राजा खिन्न हृदय और चिन्तित है। इसी घटना के साथ पंचम अंक समाप्त होता है।

षष्ठ अंक शचीतीर्थ की वन्दना के समय शकुन्तला के हाथ से जो अंगूठी नदी में गिर गई थी वह अंगूठी रोहू मछली के पेट से धीवर को मिलती है वह उस अंगूठी को बेचने के लिए बाजार जाता है। वहाँ बाजार में सिपाहियों ने उसे चोर समझकर पकड़ लिया और निर्णय के लिए राजा के पास ले गए। राजा धीवर को पुरस्कार देकर छोड़ देता है। राजा जब उस अंगूठी को देखता है तो दुर्वासा ऋषि के शाप का प्रभाव समाप्त हो जाता है और वह शकुन्तला के साथ गान्धर्व विवाह की समस्त घटना का स्मरण करता है शकुन्तला के स्मरण से राजा अत्यन्त दुःखी रहने लगता है।

राजा वसन्तोत्सव न मनाने की आज्ञा देता है। मेनका की सखी सानुमती अदृश्य रूप में राजा के पास आकर उसकी अवस्था को देखती है राजा अपने मित्र विदूषक से वार्तालाप करता है और शकुन्तला के अधूरे चित्र को मँगाकर पूरा करने का प्रबन्ध करता है। तभी प्रतिहारी मन्त्री का एक पत्र लेकर आती है कि धनमित्र नामक व्यापारी नौका के टूट जाने से समुद्र में मर गया। उसकी कोई सन्तान नहीं है, अतः उसका समस्त धन राजकोष में जाएगा।

यह सुनकर राजा अत्यन्त दुःखी होता है कि सन्तानहीन होने के कारण उसका समस्त धन भी दूसरे लोगों के पास चला जाएगा। यह सोचकर राजा मूर्च्छित हो जाता है। उसी समय इन्द्र के सारथि मातालि का आगमन होता है। वह देवराज इन्द्र का सन्देश राजा दुष्यन्त को सुनाता है कि दैत्यों के नाश के लिए इन्द्र ने आपको तुरन्त बुलाया है। राजा इन्द्र के रथ पर चढ़कर स्वर्ग के लिए प्रस्थान करता है।

सप्तम अंक - राजा दुष्यन्त ने दानवों पर विजय प्राप्त की। इन्द्र ने दुष्यन्त का विशेष सत्कार किया और उन्हें विदा किया। स्वर्ग से लौटते समय राजा दुष्यन्त ने हेमकूट पर्वत पर मारीच ऋषि के आश्रम को देखा। वह ऋषि को प्रणाम करने के लिए रुक गए। राजा मारीच ऋषि से मिलने गए। आश्रम में राजा ने एक अद्भुत मेधावी बालक को देखा जो शेर के बच्चे के दाँत गिनने का प्रयत्न कर रहा था और उस शेर के बच्चे को खेल-खेल में तंग कर रहा था।

बालक की शारीरिक आकृति राजा से मिलती-जुलती थी, अतः राजा उस बालक को पुत्रवत् स्नेह प्रदान करने लगता है। बालक भी राजा का कहना मानने लगता है। बालक के साथ उपस्थित तपस्विनी से राजा को यह ज्ञात होता है कि इस बालक की माता का नाम शकुन्तला है और यह बालक पुरुवंशी है। इसके पिता ने इसकी माता को छोड़ दिया है। अपराजिता नाम की औषधि की घटना से यह निश्चित हो जाता है कि वह बालक राजा का पुत्र है। उसी समय शकुन्तला राजा के समक्ष आती है और उसको प्रणाम करती है। राजा शकुन्तला के पैरों में गिरकर उसके प्रति किए गए अनुचित व्यवहार के लिए उससे क्षमा मँगता है। राजा और शकुन्तला मारीच ऋषि का

दर्शन करने जाते हैं। वहाँ मारीच ऋषि बताते हैं कि दुर्वासा के शाप के कारण राजा ने शकुन्तला को नहीं पहचाना। अँगूठी देखते ही शाप की समाप्ति हो गई तथा उसे शकुन्तला की स्मृति हो गयी। ऋषि ने राजा को निर्दोष बताया तथा दोनों को आशीर्वाद देकर इन्द्र के रथ पर उन्हें उनकी राजधानी भेज दिया। वहाँ राजा और शकुन्तला सुखपूर्वक रहने लगे और भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

चतुर्थ अंक की कथा

महाकवि कालिदास की प्रसिद्धि में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का विशेष योगदान है। कथावस्तु की रोचकता एवं मार्मिकता की दृष्टि से 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का चतुर्थ अंक उल्लेखनीय है। इस अंक का प्रारम्भ नाटक की विष्कम्भक योजना से अनसूया और प्रियंवदा के पुष्प तोड़ने के दृश्य से होता है। नाटक में जो दृश्य नहीं दिखाया जा सकता तथा भविष्य में होने वाली घटना के प्रति पूर्व में जो संकेत किया जाता है उसे विष्कम्भक योजना के द्वारा व्यक्त किया जाता है।

अंक के प्रारम्भ में विष्कम्भक योजना द्वारा पुष्प तोड़ती हुई अनसूया और प्रियंवदा के वार्तालाप से गान्धर्व विधि से शकुन्तला और दुष्यन्त के विवाह की सूचना मिलती है। दोनों सखियों के वार्तालाप के क्रम में यह भी ज्ञात होता है कि राजा दुष्यन्त, शकुन्तला को मुद्रिका देकर अपनी राजधानी हस्तिनापुर लौट गया है। राजा दुष्यन्त के राजधानी पहुँच जाने के बाद दोनों सखियाँ आशंका करती है कि राजधानी पहुँचकर कहीं राजा दुष्यन्त शकुन्तला को भूल न जाए। इतने में ही उन्हें आश्रम में आए हुए किसी ऋषि (दुर्वासा) का कर्कश स्वर सुनाई देता है। सखियाँ आश्रम में ऋषि का आगमन जानकर शीघ्रतापूर्वक उसके सत्कारार्थ पहुँचना चाहती हैं।

यद्यपि आश्रम में शकुन्तला भी विद्यमान है किन्तु सखियाँ जानती हैं कि शकुन्तला तो दुष्यन्त के स्मरण में ही लीन है, उसका आस-पास हो रही किसी घटना पर ध्यान नहीं रहता। अत: वे पुष्पों का चयन छोड़कर आश्रम चली जाती हैं। जैसे ही आश्रम की सीमा में प्रवेश करती हैं वैसे ही उन दोनों ने तीक्ष्ण स्वर में दुर्वासा को शकुन्तला को शाप देते हुए सुना

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्त: प्रथमं कृतामिव । ।1/4।।

जब सखियों ने शकुन्तला को शाप देकर आश्रम से बाहर आते दुर्वासा को देखा तो उन्हें दुर्वासा के शाप के अमिट प्रभाव को जानकर भय हुआ फलतः शकुन्तला को शाप से मुक्ति दिलाने के लिए प्रियंवदा दुर्वासा के पीछे जाती है और शाप से मुक्ति के लिए प्रार्थना करती है। प्रियंवदा की मधुर प्रार्थना से कुछ द्रवित होकर दुर्वासा ने कहा कि मेरा शाप अन्यथा (निष्फल) नहीं हो सकता किन्तु यदि शकुन्तला (दुष्यन्त से प्राप्त) किसी चिह्न/आभरण को दिखा देगी तो दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण हो जाएगा।

इसके बाद प्रियंवदा आश्रम आकर अनसूया से शापमुक्ति के बारे में बताती है। अनसूया और प्रियंवदा जब शकुन्तला के समीप पहुँचती हैं तब भी शकुन्तला दुष्यन्त के ध्यान में लीन रहती है। उस समय प्रियंवदा ने शकुन्तला को देखकर कहा कि 'अनसूये, पश्य तावत्। वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी। भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम् अर्थात् यह तो बायें हाथ पर अपने मुँह को रखकर दुष्यन्त की चिन्ता में ही लीन है इसे तो अपनी ही सुध-बुध नहीं है तो अतिथि को कैसे देखती?

अनसूया और प्रियंवदा शकुन्तला के प्रति अत्यन्त संवेदित हैं। दोनों ने दुर्वासा से मिले शाप को शकुन्तला से छिपाने का निश्चय किया। प्रियंवदा ने भी अनसूया के प्रस्ताव का अनुमोदन किया। इसी वर्णन के साथ विष्कम्भक समाप्त होता है। विष्कम्भक के माध्यम से हमें निम्न सूचनाएँ मिलती हैं

01 दुष्यन्त और शकुन्तला का गान्धर्व विधि से विवाह होने की सूचना।

02 दुर्वासा के शाप के प्रभाव से दुष्यन्त को शकुन्तला का विस्मरण।

03 किसी आभरण को दिखाने से दुष्यन्त को शकुन्तला का स्मरण होना।

04 राजधानी लौटने की बेला में दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को मुद्रिका/अंगूठी प्रदान करना।

05 दुष्यन्त को शकुन्तला के स्मरण हेतु मुद्रिका की उपादेयता।

इसके बाद रंगमंच पर सोकर उठे कण्व के शिष्य का प्रवेश होता है जो प्रवास से सद्यः लौटे महर्षि कण्व के आदेश से प्रातःकालीन समय का आकलन करने के लिए आश्रम से बाहर निकला है। आश्रम से बाहर निकलते ही उसे प्रातःकाल होने का निश्चय होता है।

इसके बाद अनसूया शकुन्तला के विषय में चिन्तन करती है कि यह दुर्वासा के शाप का ही प्रभाव है जो इतने दिन बीत जाने के बाद भी दुष्यन्त शकुन्तला को लेने नहीं आए। न ही उन्होंने शकुन्तला विषयक कोई पत्र भेजा। अनसूया दुष्यन्त के पास उसके द्वारा राजधानी लौटने के अवसर पर शकुन्तला को पहनाई गई मुद्रिका को भेजने के बारे में सोचती ही है कि इतने में उसे प्रियंवदा का स्वर सुनाई देता है। प्रियंवदा कहती है कि हे अनसूये ! चलो शकुन्तला की विदाई करते हैं।

अनसूया बड़े कौतूहल से पूछती है कि यह विदाई कैसे होने लगी अभी तो तात कण्व शकुन्तला के विवाह के विषय में भी अज्ञात हैं तो वह कहती है कि आज मैं शकुन्तला के पास- सुखपूर्वक निद्रा आई की नहीं? यह पूछने के लिए जब गई थी तो वहाँ पहले से ही तात कण्व विद्यमान थे वे लज्जा से शिर झुकाकर खड़ी शकुन्तला को गले लगाते हैं और उसके विवाह का अभिनन्दन करते हैं।

प्रियंवदा के इस वचन को सुनकर अनसूया कहती है कि तात काश्यप को यह सूचना कैसे मिली? तो प्रियंवदा ने कहा कि अशरीरिणी (शरीररहित) वाणी द्वारा तात को शकुन्तला के विवाह की सूचना मिलती है-

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः ।
अवेहि तनयां ब्रह्मान्नग्निगर्भा शमीमिव 114/411

विदाई के अवसर पर शकुन्तला को विविध प्रकार से सजाया जाता है। सखियाँ आश्रम के अनेक सुलभ प्रसाधनों से शकुन्तला का अलङ्करण करती हैं किन्तु सखियों को लगता है कि वन के इन प्रसाधनों से शकुन्तला शोभित नहीं हो पा रही है क्योंकि शकुन्तला की देहवल्ली बहुमूल्य आभूषणों से सजाने योग्य है, इसलिए प्रियंवदा कहती है-

'आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैर्विप्रकार्यते। इसी समय दो ऋषिकुमारों का प्रवेश होता है और उसमें से नारद नामक ऋषिकुमार कहता है कि- 'इदमलङ्करणम् । अलक्रियतामत्रभवती'। माता गौतमी ऋषिकुमार नारद से पूछती हैं कि यह बहुमूल्य आभूषण और परिधान कहाँ से प्राप्त हुए? तो ऋषिकुमार नारद ने उसे महर्षि कण्व के प्रभाव से प्राप्त हुआ बताया। गौतमी फिर पूछती है कि क्या कण्व जी ने मानसिक सिद्धि से इन आभूषणों को प्रकट किया तो दूसरा ऋषिकुमार कहता है कि तात ने हमें शकुन्तला के निमित्त वन-वनस्पतियों से पुष्प लाने के लिए आदेश दिया था।

इसके बाद वन के उन वनस्पतियों ने ही एक-दूसरे वनस्पतियों से स्पर्धा करते हुए सम्मुखस्थ बहुमूल्य वस्तुओं को प्रदान किया है।

प्रियंवदा वन-वनस्पतियों की इस विलक्षण कृपा को शकुन्तला को पति के घर राजलक्ष्मी कहलाने के सौभाग्य का निमित्त अथवा सूचक मानने लगती है। अनसूया और प्रियंवदा आश्रम में रहने के कारण नगरोचित आभूषण पहनने पहनाने की विधि से सर्वथा अपरिचित हैं अतः वे दोनों चित्रकार द्वारा तैयार किये गये चित्रों को देख-देखकर विलक्षण रीति से शकुन्तला को आभूषण पहनाती हैं।

इसके बाद स्नान करके सरोवर से बाहर निकलते हुए साथ में कुछ सोचते हुए कण्व का रंगमंच पर प्रवेश होता है-

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् दर्शनम् ।।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः 114/611

शकुन्तला की श्रृंगार विधि जैसे ही समाप्त होती है वहाँ महर्षि कण्व का प्रवेश होता है। कण्व को देखकर शकुन्तला लज्जा का अनुभव करती है।

पास में स्थित माता गौतमी के आदेश से शकुन्तला कण्व का अभिवादन करती है तो महर्षि कण्व शकुन्तला को आशीर्वाद देते हैं।

कण्व के आशीर्वाद के पश्चात् शकुन्तला की विदाई का आरम्भ होता है। शकुन्तला को माता गौतमी, शाङ्गरव एवं शारद्वतमिश्रा हस्तिनापुर छोड़ने के लिए जाते हैं। शकुन्तला की विदाई के अवसर पर महर्षि कण्व के मुख से शकुन्तला से सेवित समस्त प्राकृतिक वन वनस्पतियों को उसे विदाई की अनुमति देने के लिए अत्यन्त मार्मिक वचन निकलता है-

महर्षि कण्व के उक्त वचन को सुनकर शकुन्तला को वन-बन्धु-वृक्ष उसे पतिगृह जाने की अनुमति देते हैं। जब शकुन्तला पतिगृह को प्रस्थान करती है उस समय आश्रम की दशा अत्यन्त कारुणिक हो जाती है- हिरिणीयाँ दर्भों को चबाना बन्द कर देती हैं,

मयूर नाचना बन्द कर देते हैं तथा लताएँ भी मानो जीर्ण पत्तों को गिराकर अश्रु बहा रही हों। विदाई के अवसर पर कालिदास ने शकुन्तला, अनसूया और प्रियंवदा के कारुणिक संवाद का चित्रण किया है।

जब शकुन्तला आश्रम से कुछ दूर पहुँचती है तो उसके साथ चल रहे कण्व एवं अनसूया और प्रियंवदा को आगे जाने से रोकते हुए शाङ्गव कहता है कि प्रिय व्यक्ति को जल दिखाई देने तक अनुसरण करना चाहिए, यह सरोवर का तीर दिखाई दे रहा है, हमें यहीं पर कुछ आवश्यक सन्देश देकर आप आश्रम लौट सकते हैं। तब महर्षि कण्व शाङ्गरव के माध्यम से दुष्यन्त को उपदेशात्मक सन्देश देते हैं-

अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुचैः कुलं चात्मन-
स्त्वय्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम् ।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः 114/711

दुष्यन्त को उपदेश देने के बाद महर्षि कण्व ने शकुन्तला को जो उपदेश दिया, वह भारतीय आदर्श एवं उदात्त मूल्यों को प्रस्तुत करता है-

सरोवर के तट पर दोनों सखियाँ शकुन्तला से कहती हैं कि यदि किसी कारण राजा दुष्यन्त तुम्हें पहचानने से मना करे तो उसे उसके द्वारा दी हुई मुद्रिका दिखा देना। सखियों की बात सुनकर शकुन्तला कहती है कि तुम्हारे इस सन्देह से मैं काँप जा रही हूँ, जिसे सुनकर दोनों सखियाँ शकुन्तला को आश्वस्त करती हैं- 'मा भैषीः। स्नेहः पापशङ्की'। डरो मत, स्नेह पाप अथवा अनिष्ट की आशंका करता है। पतिगृह को जाती हुई शकुन्तला महर्षि कण्व से कहती है कि तात ! मैं अब आश्रम में कब आ सकूँगी?

जाने के लिए अनुरोध करती है तो कण्व भी शकुन्तला को आश्रम के अनुष्ठान सम्पादन की अनिवार्यता समझाते हुए आश्रम जाने के कहते हैं, तो शकुन्तला

उनसे गले लगकर भावुक हो जाती है। शकुन्तला के इस भावुक वचन को सुनकर कण्व भी दु:खी होते हैं।

इसके बाद शकुन्तला पतिगृह के लिए प्रस्थान करती है, महर्षि कण्व के साथ अनसूया और प्रियंवदा भी आश्रम में प्रवेश करती हैं। शकुन्तला की सकुशल विदाई कर देने के बाद महर्षि कण्व को दायित्व से निवृत्ति की अनुभूति होती है, वह कहते हैं-

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः ।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा । 14/2211

इस दृश्य के साथ चतुर्थ अंक की समाप्ति होती है।